Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भवभूति और कालिदास की नाट्यकला का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. पी.एस. बघेल *

*** एसोसिएट प्रोफेसर, पीएम एक्सीलेंस शहीद भीमानायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महाविद्यालय,बड़वानी (म.प्र.) भारत**

प्रस्तावना – संस्कृत नाटककारों में कालिदास और भ–भूति दोनों ही में नाट्यकला की विशेषता अद्धितीय है। दोनों में ही सघन भाव प्रवणता परिलक्षित होती है। भवभूति ने उत्तर–रामचरित को सर्वोच्च नाट्यकृति तक भभावावेश में घोषित की दिया था–

'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।' तथा 'कवियेकालिदासाद्या – भूतेर्महाकवि।।'

भवभूति की कविता वनप्रान्तर की निर्झरणी के समान स्वच्छन्द गति से प्रवाहित है। अत: भवभूति और कालिदास की काव्यकला की तुलना सहजरूप से अध्येताओं का भी यह प्रिय भाग रहा है।

प्रमुख रूप से महाकवि भवभूति की काव्यानुभूति भावुकता की दृष्टि से अत्यंत प्रवहमान रही है। उत्तर रामचरित तथा मालती माधव दोनों ही में भावप्रवणता अति श्रेष्ठ सिद्ध है। उक्त दोनों नाटककारों में भावों की सघन अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

भवभूति के समस्त पात्र भावुकता से अभिभूत है। चाहे वे राम हों सीता हों कौशल्या हो या माधव हों। यहाँ तक कि स्थितप्रज्ञ ब्रह्मविद् राजा जनक भी इसी शोक से अभिभूत है। जनक के दु:ख का पता निम्नांकित पद्य से भलीभाँति प्रतीत होता है–यथा–

अपत्ये यत्ताद्दग्दुरितम–त्तेन महता
विषक्तस्तीव्रेण व्रणितहृदयेन व्यथयता।
पटुर्धारावाही नव इव चिरेणापि हि न में
निकृन्तन्मर्माणि क्रकच इव मन्युर्विरमति।

(उत्तर रामचरित4/3)

अर्थात्–मेरे अपत्य सीता पर जो उस प्रकार की आपत्ति पड़ी है उस बड़ी भारी, पीड़ा कारक, हृदय को घायल करने वाली आपत्ति से लगा हुआ प्रबल, सतत प्रवहमान और नया जैसा शोक आरे के समान मर्मस्थलों को काट रहा है और रुकता नहीं।

राम के विलाप से तो पूरा नाटक ही भरा–पूरा है। माधव और मकरन्द के विलापों को मालती माधव में देखा जा सकता है। इन नाटकों से भवभूति की भावुकता भलीभाँति परिलक्षित होती है। फर्क सिर्फ दोनों नाटककारों में ही दिखाई देता है कि कालिदास –भूति की तरह अधिक भावप्रवण प्रतीत नहीं होते।

भवभूति हर प्रकरण में गंभीरता प्रकट करते है किन्तु कालिदास के समान भवभूति गंभीर उस तरह नहीं दिखाई देते जैसे –भूति है। कालिदास व्यंजना के कवि है। थोड़े शब्दों में भावों की अभिव्यक्ति कवि की विशेषता है।

भवभूति में स्वच्छंद भावाक्तिता भरपूर से देखी जा सकती है। रस के वर्णन में वे कल्पना के यथेच्छ अवसर देते हैं। करूण रस की उनकी वर्णन शैली मालती माधव में द्रष्टव्य है।

कालिदास मूलत: शृंगार वर्णन में अप्रतीम दिखाई देते हैं। कुमारसंभव में उनका शृंगार वर्णन अपनी सीमा के आखरी छोर तक पहुँचा है। किन्तु भवभूति की रचना का प्रधान रस करुण है कहा भी है कि, एको रस करूण एव निमित्ता भेदाद्। जिसमें –भूति अद्धितीय है।

भवभूति का प्रणय वर्णन भी कालिदास की अपेक्षा अधिक उदात्त तथा उज्जवल है। भवभूति ने प्रेम का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह संस्कृत साहित्य में अद्धितीय है। भवभूति का प्रेम अलौकिक है उसमें कृत्रिमता नहीं है। वह मांसलभभी नहीं है। भवभूति का प्रेम ईश्वरीय प्रेम की तरह वरदान स्वरूप दिखाई देता है। भवभूति में विरह वर्णनभभी अधिक भावुक भरा रहा है। दुष्यंत को भी शकुन्तला का वियोग सहना पड़ा। त्याग के साथ ही उसका प्रत्यारख्यान भी किया है।

भावों की जितनी सघनता भवभूति में है उतनी कालिदास में नहीं। किन्तु कालिदास में सरलता है जो भवभूति में नहीं दिखाई दी। भवभूति में लंबे पद तथा विलष्टता पाई जाती है।

भवभूति में यथार्थ का भाव अधिक दिखाई दिया। कालिदास की शैली में प्रसाद गुण है, रस के अनुरूप मधुर पद विन्यास है, जो भवभूति में नहीं है। थोड़े शब्दों में भावों की अभिव्यक्ति कालिदास में है किन्तु भवभूति में अभिधा ग्रहण अधिक दिखाई देता है।

भवभूति में वर्णन करने की व्यापकता है। जहाँ भी वे वर्णन करते है उनमें व्यापकता पर्याप्त मात्रा में है। किसी रस की वर्णना में वे काफी दूर तक चले जाते हैं। करुण रस –भूति की विशेषता है। उदाहरण के लिए 'मालतीमाधव' में माधव का विलाप दूर तक व्याप्त है। 'मशान का बीभत्स' वर्णन रचना में अधिक है।

कालिदास प्रधान रूप से शृंगार वर्णन में निष्णात है। कुमारसंभव में उनका शृंगार अपनी सीमा पार कर गया है। जबकि भवभूति में करुण रस का अधिक चित्रण मिलता है।

भवभूति का प्रणयभभी कालिदास की अपेक्षा अधिक उदात्त है, उज्ज्वल है तथा स्पृहणीय है। भवभूति ने प्रेम का जो आदर्श उपस्थित किया है वह संस्कृत साहित्य में अद्धितीय है। भवभूति का प्रेम अलौकिक है। किन्तु उनमें कृत्रिमता प्रतीत नहीं होती।भवभूति में सच्चे प्रेम को ईश्वर का वरदान माना

है। सच्चा प्रेम सुख-दुख सब अवस्थाओं में रहता है। उत्तररामचरित में सुख-दु:ख का अद्वैत गुण सर्वत्र दिखाई देता है। यथा-

अद्वैतं सुखदु:खयोरनुगुणं सर्वास्ववस्थासु यत्-
विश्रामोहृदस्य यत्र, जरसा ययस्मिन्नहार्यो रस:।
कालेनावरणात्ययात्परिणते यतस्नेहसारेस्थितं।
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्राप्यते।।
(उत्तर रामचरित 1/39)

अर्थात् वास्तविक प्रेम सुख-दु:ख दोनों अवस्थाओं में एक सा रहता है, सम्पत्ति, विपत्ति सारी अवस्थाओं में अनुकूल रहता है, हृदय को वहाँ विश्राम मिलता है, वृद्धावस्था से उस रस में कोई कमी नहीं आती, जैसे-जैसे समय बीतता है, वैसे-वैसे आवरणों के नष्ट होने से जो परिणत स्नेह सार रूप बच जाता है। ऐसा भला प्रेम किसी प्रकार ही सौभाग्शाली को प्राप्त होता है।

कालिदास प्रकृति के कोमल, स्निग्ध रूप के उपासक है, पर भवभूति प्रकृति के स्निग्ध-कोमल रूप के प्रति विशेष पक्षपात नहीं रखते। भवभूति के प्रकृति वर्णन से कालिदास के हिमालय-वर्णन की तुलना करते हैं तो दोनों में काफी अंतर स्पष्ट होता है। वस्तुत: भवभूति के करुण रसभरे चित्त में यदि सुकुमार और लालित्य का प्राधान्य होता तो करुण का परिपाक ही उस सफलता से नहीं हो सकता था जितना हुआ है। युद्ध के वर्णन में भी भवभूति ने जितनी कुशलता प्रदर्शित करते हैं, उतनी कालिदास में नहीं दिखाई देती। कालिदास के साहित्य में वर्णन की व्यापकता है जिससे कालिदास उत्कृष्ट माने जाते हैं। भवभूति में पाडित्य का चित्रण भी यथेष्ट किया गया है। भवभूति ने वेदों, उपनिषदों तथा नाना विधाओं का खूब अध्ययन किया है, परिणामस्वरूप उनमें पाण्डित्य का विशेष गुण परिलक्षित होता है।

कालिदास की सर्वोत्तम कृति 'अभिज्ञानशाकुन्तल' है जबकि भवभूति में 'उत्तररामचरित' सर्वोत्तम कृति है। कालिदास महाभारत के आदि पर्व अध्याय 71 से 74 में महाभारत आख्यान का वर्णन है। इसी प्रकार उत्तररामचरित में वाल्मीकीय रामायण की कथावस्तु ग्रहण की है।भवभूति और कालिदास ने उक्त आख्यानों में आवश्यक रूप से परिवर्तन कर कथानक को नवीन स्वरूप प्रदान किया है।

उत्तररामचरित में सीता के त्याग का वर्णन किया गया है। अपने मान-सम्मान की रक्षा में उत्तरामचरित का चित्रण किया गया है। सीता को प्रजापालन रूप धर्म के लिए त्याग तो दिया, पर उनके पति-हृदय को समाधान न मिल सका। सीता और राम का मिलन भी कवि की मौलिक अनुभूति दर्शायी है। इस प्रकार दोनों ने ही नाटकों को सुखान्त में परिवर्तित किया है।

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से देखा जाय तो 'अभिज्ञानशाकुन्तल' और उत्तररामचरित के दोनों में नायकों का चित्रण अपने अपने तरीकों से चित्रण को श्रेष्ठता दी है। भवभूति के 'राम' को आदर्श नायक के रूप में चित्रित किया है। वे आदर्श राजा, आदर्श प्रजापालक, आदर्श पति और आदर्श पिता के रूप में व्यक्त किये गये हैं।

स्त्री पात्रों की दृष्टि से कालिदास ने शकुन्तला का चित्रण किया है। तो भवभूति ने उत्तररामचरित में सीता का चित्रण किया है।

शकुन्तला कालिदास की दृष्टि में अनुपम सौंदर्य-शालिनी के रूप में दिखाई गई हैं। जबकि उत्तररामचरित में सीता के चरित्र की महानता वर्णित की गई है। 'अभिज्ञान शाकुन्तल' और 'उत्तररामचरित' दोनों में कथानक, चरित्र, देशकाल आदि का सर्वश्रेष्ठ चित्रण देखने को मिलता है। नाटकीता की दृष्टि से देखा जा तो अभिज्ञान शाकुन्तल निश्चित रूप से उत्तर रामचरित से श्रेष्ठ ठहराता है।

महाकवि कालिदास की कीर्ति -भूति के समय तक दिग्दिगन्त में व्याप्त हो चुकी थी। भवभूति ने बहुत से भाव कालिदास के शाकुन्तल में उपलब्ध होते हैं। यथा-

'कन्यायाश्च परार्थतैव', उत्तरराम चरित में -भूति ने दर्शाया है। जबकि कालिदास नें 'अर्थो हि कन्या परकीय एव-में शाकुन्तल में स्त्री पात्रों के रूप में साम्य दर्शाया है।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भवभभूति- महावीर चरित
   मालती माधव
   उत्तर रामचरित
2. कालिदास- अभिज्ञान शाकुन्तल
   विक्रमोर्वशीम्
   मेघदूतम्

अन्य:

1. काव्यालंकार- आचार्य भामह
2. कालिदास ग्रथावली- डॉ. सीताराम चतुर्वेदी
3. काव्यादर्श- दण्डी धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता
4. ध्वनलोक-आनन्दवर्धन (आचार्य विवरेश्वर)

****